Aesthetics in Various Types of Music & its Impact on Humanity

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संगीत और साहित्य का सहसंबंध

Editors

Mr. N.P. Singade • Mr. M.G. Wahane

Mr. S.P. Gajbhiye • Mr. N.G. Jadhav

Scanned with OKEN Scanner

विषय-सूची

Message v
Message vii
Preface ix

Section-I : Hindi Paper

1. संगीत और साहित्य का संबंध
   प्रा. अरूणा च. हरले 3
2. तकनीकी का संगीत उद्योगों पर प्रभाव
   डॉ. श्वेता दीपक वेगड़ 9
3. भारतीय संगीत चिकित्सा
   डॉ. राहुल मल्हारी भोरे 15
4. संगीत चिकित्सा
   डॉ. नेत्रा तेल्हारकर 21
5. स्त्री जातियों पर बंधन और संगीत क्षेत्र में उनका योगदान
   प्रा. शरद गजभीये 27
6. संगीत : एक चिकित्सक पद्धति
   प्रा. डॉ. कु. प्रिती बी. इंगळे (वाकपांजर) 35
7. मानवी विकास पर संगीत का प्रभाव
   प्रा. नाना गणपत जाधव 44
8. मानव की भृण अवस्था एवं संगीत चिकित्सा
   प्रा. विद्या प्र. गावंडे 54
9. पं. भातखंडे लिखित हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका अनुसंधान एक अध्ययन
   प्रा. विशाल विजय कोरडे 58

Scanned with OKEN Scanner

7

मानवी विकास पर संगीत का प्रभाव

प्रा. नाना गणपत जाधव

प्रस्तावना

मानवी संस्कृति के विकास का शोध येणे संगीत का शोध है, ऐसे हम स्पष्ट रूप से मान सकते है. क्युकी जैसे जैसे मनुष्य विकास करते गया, वैसे वैसे संगीत में वृद्धि करते गया और संगीत के साथ अपनी गतिविधियों को पार करते गया. कुछ ज्ञानी पंडित के संशोधन को ध्यान में रखते हुऐ हम ऐसे कह सकते है, की आदिमानव को आपने शब्द के संवाद को स्थापित करणे के लिये संगीत का उपयोग करना पडा. जैसे मानव उत्क्रांत होते गया, वैसे संगीतही विकसित होते गया. और आपने संगीत को साध्य करणे के लिये मनुष्य अपनी जो अलग अलग साधनायेहै। उसे वो साध्य करणे के लिये प्रयास करता राहा. जैसे की मानव प्रारंभ में जंगल में रहता था, तो आपने भोजन के शोध में वोपूरा जंगल घुमता था, पेड पौदे कंदमुलसे और पशु पंछी की शिकार करके आपना भोजन करता था,उस वक्त वो बहुत सारे पशु, पंछींओंकी आवाजे सुनता था, और उसी तरहां अपने सुरोंके माध्यमसेआपनी आवाज निकालनेकी साधना करता था, और आपनी आवाजसे पशु, पंछींओं को आपने नजदिक बुलाता था। और उनकी शिकार करता था। तो ईस प्रकार आपने सुरोंके माध्यमसे तरहांतरहां की आवाजे निकालते निकालते और बारंबार उसी तरहां साधना करते करते कुछ नाद को उसने आत्मसाद किया, फिर कुछ भावनाओं को और अपनी हरदिन की कीयांको प्रगट करने के लिए उस नाद कावो प्रयोगअपने जीवन शैली में करता रहा. ईस विषय को हम ऐसा मान सकते है की, यही संगीत निर्माण का एक अविभाज्य घटकतो नही. और हम यह भी कहें सकतें हैं की उसकाही विकसित उत्क्रांत रूप येने आदिवासी संगीत है, आदिवासी संगीत के बारे हम यह स्पष्ट रूपसे कहें सकते हैं। की जंगल में रहने वाले मनुष्य के हुंकार युक्त नाद को

Scanned with OKEN Scanner